जिस जल निध कारण तुम जग आए

(सत्संदेश फरवरी, क-भ में प्रकाशित प्रवचन)

जिस जल निध कारण तुम जग आए
सो अमृत गुरु पाही जियो॥

यह वाणी श्री गुरु नानक साहिब पहली पातशाही की सामने आ रही है। अनुभवी महापुरुष मुक्त होते हैं और लोगों को मुक्त करने आते हैं।

आप मुक्त मुक्त करे संसार॥

वे आप आज़ाद होते हैं और दुनिया को भी जकड़ों से आज़ाद कराते हैं लेकिन दुनिया फिर जकड़ों में जाना चाहती है। जैसे भेड़ों की खासियत है कि अगर बाड़े में आग लग गई हो और किसी ज़ेड़ को रेवड़ से बाहर निकाला जाए तो वह फिर रेवड़ में शामिल हो कर जल मरना चाहती है। संत जब भी आये, दुनिया को जकड़ों से आज़ाद कराते रहे, उन के जाते ही हम फिर भूल में पड़ जाते हैं, फिर उन जकड़ों में चले जाते हैं जिन से उन्होंने हमें निकाला था। कहीं पूजा में, कहीं पाठ में, कहीं नित नियम और जप तप व्रत में हम बंध के रह जाते हैं। जिस गर्ज़ को पाने के लिए ये सब रस्म रिवाज और नियम बने थे उसे तो हम भूल जाते हैं, सिर्फ लकीर के फकीर बन के रह जाते हैं। छोटी छोटी बातें हैं मसलन तीर्थों पर जाने की जो यह रस्म चली आती है उस की गर्ज़ तो यह थी कि जो लोग रात दिन आठों पहर दुनिया के झंझटों में फंसे पड़े हैं, साल में एक आध मरतबा वे इन झंझटों से निकल कर किसी एकांत स्थानों में बैठें। वहां जा कर किसी जागृत पुरुष की सोहबत मिल जाये तो दुनिया का जो रंग चढ़ा हुआ है, उतर जाए थोड़ी देर के लिए होश आ जाए। सेहत की बहाली के लिए हम पहाड़ों पर जाते हैं, उसी तरह आत्मा की उन्नति के लिए लोग तीर्थों पर जाते थे। वहां जाने की गर्ज़ यही थी कि आत्मा की सेहत बहाल हो। अब हमारी ज़्या हालत है ? हम सब बीमार हैं। हमारी आत्मा बीमार है। हमारी आत्मा मन के अधीन है, मन इंद्रियों के अधीन हो कर इंद्रियों के रसों और भोगों के लोभों में लंपट हो रही है। पुराने भाइयों को तीर्थ यात्रा का तजरबा होगा। साल छमाही में भाव सहित लोग तीर्थों पर जाते थे। महीना पंद्रह दिन वहां रहते, दुनिया और दुनिया के झंझटों से फारिग़ हो कर यकसू हो के वहां बैठते थे।

ये तीर्थ कैसे बने ? हरि के जो दास थे उन की याद में तीर्थ बने। जहां कोई अनुभवी महात्मा रहा वह जगह तीर्थ बन गई मगर सवाल यह है कि:-

तीर्थ बड़ो कि हरि का दास। (कबीर साहिब)

अनुभवी महात्मा किसी को रोकते नहीं कि तीर्थों पर न जाओ। वे यह कहते हैं कि जिस गर्ज़ के लिए तुम वहां जाते हो उस गर्ज़ को पाओ। रस्मों रिवाजों की जो गर्ज़ होती है उसे भूल कर लोग लकीर के फकीर बन के रह जाते हैं। तीर्थ कभी निर्जन स्थान थे वहां जाकर इंसान यकसूई हासिल कर सकता था। अब हरिद्वार है, बड़ा मुकद्दस तीर्थ था यह कभी लेकिन आज वहां दो सिनेमा हैं, हरिद्वार अब एक सैरगाह बन के रह गया है। लकीर के फकीर यह समझते है कि तीर्थों को जा कर हाथ लगा लो मुक्ति मिल जाएगी। तीर्थों को खाली हाथ लगाने से मुक्ति नहीं मिलेगी। संत महात्मा लोगों को इन जकड़ों से आज़ाद कराने आते हैं। काशी के पास हड़ंबा एक जगह है। आम ज़्याल है कि जो हड़ंबे में मरे वह नर्क में जाता है और जो काशी में मरे वह स्वर्ग में जाते हैं। कबीर साहिब फरमाते हैं :-

हरि का संत मरे हड़ंबा
तो भी सहज पद पाय।

हरि का संत जो सत पद को पा चुका है वह हड़ंबे में भी मरे तो भी वह सहज अवस्था स्थान को पायेगा। संत महात्मा जब भी आये, वे दुनिया को जकड़ों से

आज़ाद करते रहे। उन्होंने किसी के खिलाफ आवाज़ नहीं उठाई मगर हर शै (चीज़) के बारे में सही नज़री दुनिया को देते हैं। उसकी right import (सही कीमत) दुनिया को समझाते हैं वही रस्में जो एक नेक मकसद को सामने रखने को बनाई गई थीं वही रस्में सही नज़री से न देख सकने के कारण हमारे लिए जंज़ीरें बन गई हैं। तीर्थों पर जाने की गर्ज़ तो यह थी कि थोड़ी देर के लिए घरबार की जकड़ों से आज़ादी मले, दुनिया का जो रंग चढ़ रहा है, यह उतरे और इसे कुछ अपनी होश आये। इस गर्ज़ को तो पाया नहीं, बस यह समझ लिया कि तीर्थों पर स्नान करने से मुक्ति हो जाती है। श्री गुरु अमरदास फरमाते हैं :-

मन मैले सब किछ मैला
तन धोते मन हच्छा न होय॥

स्नान करने से जिस्म की सफाई हो सकती है, मन की मैल तो नहीं उतरती:-

इक भा लत्थी नहातेयां दो भा चढ़ गई होर॥

श्री गुरु नानक साहब का बड़ा आज़ाद कलाम है, फरमाते हैं :-

जिस जल निध कारण तुम जग आये

जिस निधियों के देने वाले जल को पाने के लिए तुम दुनिया में आये, निधि कहते हैं खुशी को। दुनिया में नौ किस्म की निधियां (खुशियां) हैं, रुपया पैसा, तन्दुरस्ती वगैरा नौ किस्म की निधियां हैं। सो फरमाते हैं हर किस्म की खुशी देने वाला जो जल है, सो अमृत गुरु पाही जियो। वह जो अमृत है वह तुज्हें गुरु से मिलेगा।

संतों की बाणी में खास इस्तलाहात (परिभाषाएं) हैं, खास terms हैं। जब तक उन इस्तलाहात की पूरी वाकफियत न हो संतों के कलामों के सही मायने न तो समझ आते हैं न उन से पूरा फायदा उठाया जा सकता है। जैसे कानून की किताबों में वज़ाहत की जाती है कि फलां लफ़्ज़ से हमारी मुराद यह है फलां लफ़्ज़ इन मायनों में इस्तेमाल किया गया है। जब तक कानून की terminology (परिभाषाओं) की पूरी वाकफियत न हो आम आदमी कानून की किताबों का सही मज़मून नहीं समझ सकता। इसी तरह संतों की वाणियों में जो इस्तलाहात, terms (परिभाषाएं) मिलती हैं उन के मायने समझे बगैर बाणियों का मज़मून समझ नहीं आ सकता।

यहां लफ़्ज़ अमृत आया है। अमृत के लफ़्ज़ी मायने हैं अमर कर देने वाली शै (चीज़) जो हमेशा की जिंदगी देने वाली चीज़ है। वेदों में इसे सोम-रस कहा गया है। मुसलमान फकीरों ने इसे आबे-हयात कहा। हज़रत मसीह ने इसे water of life कहा। मसीह एक चश्मे पर गये। एक स्पार्टन लेडी (उस कौम की औरत जिसे अछूत समझा जाता था) पानी भर रही थी, मसीह ने उस से पानी मांगा। वह झिझकी। मसीह ने घड़ा पकड़ा और पानी पी लिया और स्पार्टन लेडी से कहा, तूने मुझे पानी पिलाया है, मैं तुझे water of life (हमेशा की ज़िंदगी देने वाला पानी) दूंगा।

अमर जीवन देने वाला यह अमृत ज़्या है ? संतों ने जो इस्तलाहें (परिभाषाएं) बरती हैं, जो terms इस्तेमाल की हैं उन्हें खोल के ज़्यान किया है। अगर इसी एक लफ़्ज़ का मफहूम समझ लो तो सारी बातों का सार समझ में आ जाये। गुरबाणी में अमृत की यह तारीफ की गई है :-

अमृत साचा नाओं है
कहेया कछु न जाये॥

वह कहने और समझने का मज़मून नहीं। उसे कोई लफ़्ज़ों में ज़्यान करना चाहे तो नहीं कर सकता। एक ऐसा गांव हो जहां किसी ने घंटा देखा ही नहीं, उन्हें लाख कहो कि घंटा टन टन टन करता है उन की समझ में नहीं आयेगा कि घंटा ज़्या चीज़ है। सो फरमाते हैं कि अमृत या सच्चा नाम कहने सुनने का मज़मून नहीं, वह अनुभव की चीज़ है।

पीवत ही परवाण भया पूरे शबद संभार॥

कि उस अमृत को जिसे सच्चा नाम और शब्द भी कहा है तुम पियोगे यानी उस

के साथ लगोगे तो तुम मालिक की दरगाह में परवान हो जाओगे और उसमें समा जाओगे। अब अमृत को सच्चा नाम कर के ज़्यान किया है। इस का मतलब यह है कि कोई झूठा नाम भी है। एक वह नाम जो अटल और लाफानी है और एक वह जो फना हो जाने वाला है। एक अक्षरी नाम, एक वह नाम पावर जिस का यह अक्षरी नाम बोध कराते हैं।

बावन अज़्खर लोक त्रै सब कु छ इन ही माहिं।
एह अज़्खर खिर जाएंगे ओह अज़्खर इन में नाहिं॥

वह इन अक्षरों से परे है, वह जो इन सब अक्षरों की background है उस से मिलने का सवाल है। श्री गुरु अमरदास जी ने उस का आगे और निर्णय किया है:-

अमृत हर हर नाम है मेरी जिंदड़िए
अमृत गुरु मत पाये राम ॥

अमर जीवन देने वाला वह सच्चा नाम, उदगीत, श्रुति, नाद, आकाशवाणी कलमा जिसे संतों ने शज़्द या बाणी करके भी ज़्यान किया है वह कहां से मिलता है ? गुरु से। जो उससे जुड़ा हुआ है वह तुज़्हें भी उस से जोड़ सकता है। वह नाम दुनिया की हर बीमारी का ईलाज है।

सरब रोग को औखध नाम॥

नाम हर किस्म की बीमारी का वाहिद इलाज है। नाम ऐसी दवा है जो हर किस्म की बीमारियों का इलाज है चाहे वह आधिदैविक रोग हों, आधिभौतिक हों या आध्यात्मिक रोग। आध्यात्मिक रोग यानी मन के रोग, जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार वगैरा नाम के साथ लगने से दूर हो जाते हैं। इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गये तो इंद्रियों के विषय विकार कहां रहे ? आधिदैविक रोग बाहर के दुख, आत्मा बलवान हो तो इंसान खुशी से बरदाश्त कर लेता है। उन की pinching (चुभन) नहीं रहती। रहे आधिभौतिक रोग यानी जिस्म की बीमारियां तो डाज़्टरी असूल के मुताबिक दवा किसी बीमारी का इलाज नहीं बल्कि कुदरत की जो healing power है उस के लिए वह रास्ता साफ करती है। आत्मा में curative power (बीमारियों को ठीक करने की ताकत) मौजूद है। नाम के साथ लग कर आत्मा बलवान हो जाये तो जिस्मानी बीमारियां भी नहीं रहतीं। अब निर्णय करते हैं कि वह अमर जीवन देने वाला नाम जिस की यह सारी सिज़्तें ज़्यान की हैं, मिलता कहां है ?

अमृत हर का नाम देवें दीखेया॥

वह अनुभवी पुरुष से दीक्षा लेने से मिलता है। ज़िंदगी से ज़िंदगी मिलती है, life आती हैं। उस नाम पावर का लिंक हर इंसान के अंदर मौजूद है लेकिन उस का अनुभव, उस का तजरबा, उस का contact किसी अनुभवी पुरुष से ही मिलता है। वह अनुभव की चीज़ है।

अमृत ऐको शज़्द है
नानक गुरमुख पाया॥

पहले नाम कर के ज़्यान किया। अब उसी चीज़ को शज़्द कर के बयान किया है। फरमाते हैं, कोई गुरु सिख ही उसे हासिल कर सकता है। शज़्द की आगे तारीफ की है :-

उपत परलै शज़्दे होवै॥
शज़्द ही फिर ओपत होवै॥

नाम या शज़्द उस पावर का नाम है जो सारी सृष्टि को बनाने वाली है, जो खंडों, ब्रह्मंडों को पैदा करने वाली है और उन्हें लिए ज़ड़ी है। जब वह सत्या, वह पावर सृष्टि से ज़ींच ली जाये तो सृष्टि की प्रलय हो जाती है और उस के बाद दोबारा सृष्टि की रचना होती है तो उसी के सहारे। वह मालिक अनाम है, जब होने में आया तो नाम हुआ। नाम रूप हो कर वह ज़र्रे-ज़र्रे में रम रहा है। अमृत की और तारीफ की है कि इस में बड़ा भारी रस है:-

अमृत नाम महारस मीठा॥
गुरु शज़्द महारस मीठा॥

गुरु द्वारा ही जिस शज़्द या नाम का अनुभव मिलता है उस में बड़ा रस है, बड़ी मिठास है। यही और महात्मा भी कहते हैं:-

अदृष्ट अगोचर नाम अपारा॥
अतरस मीठा नाम प्यारा॥

वह इंद्रियों का मज़मून नहीं, इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उस का ताल्लुक मिलता है और इस में बड़ी भारी मिठास है। फरीद साहब फरमाते हैं:-

शक्कर, खंड, निवात, गुड़, माखेयों माझा दुध॥

हज़्बु वस्तु मिट्ठियां साईं न पुज्जण तुध॥

शक्कर, खांड, मिश्री, मज़खन और दूध ये सारी चीज़ें मीठी हैं मगर ऐ मालिक, तेरे नाम में जो मिठास है वह इन में से किसी चीज़ में नहीं। अमर कर देने वाला प्रभु का नाम है, उस में वह रस है जिस के आगे दुनिया के सारे रस फीके हैं। श्री गुरु अर्जुन देव साहब फरमाते हैं :-

बिखे बन फीका त्याग री सज़िये नाम महारस पियो॥

सब महात्मा नाम की महिमा बयान करते चले आ रहे हैं कि उस में बड़ा रस है। उस के साथ लगने से सारे दुख सारे रोग दूर हो जाते हैं। मिलता उसे है जो गुरमुख हो। जिस की किसी अनुभवी पुरुष से आंखें चार नहीं हुई वह उस रस को नहीं ले सकता। अब और वाजेह (स्पष्ट) करते हैं कि वह अमृत कहां और कैसे मिलता है:-

धादत थज़्मेया सत्गुरु मिलिये दसवां दवार पाया॥

यह जो मन इंद्रियों के घाट पर बाहर दुनिया में फैल रहा है इसे इधर उधर भागने से रोकना होगा, इसे अंतर्मुख खड़ा करना होगा। कोई अनुभवी पुरुष जो सत की प्राप्ति कर चुका है, उस की सोहबत संगत में, यह मन खड़ा हो गया वह इस अंतर्मुख दसवें दरवाज़े का रास्ता देगा:-

तित्थे अमृत भोजन सहज धुन वाणी
जित शज़्द जगत थम रहाया॥
तहं अनेक वाजे अनहद है
सच्चे रहेया समाये।
त्यों नानक सत्गुर मिले।
घावत थज़्मेया सहज घर वसाया॥

वहां सहज की ध्वनि, वह नाम, वह आकाशवाणी हो रही है जिस के आधार पर यह सारा जगत खड़ा है। अपने आप वह वाणी हो रही है, उस में sound principle है। यह तो एक पहलू बयान किया उस का। वह अनुभव की शै (चीज़) है। कोई अनुभवी पुरुष ही इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर उस का ताल्लुक देगा। जब मन इंद्रियों के घाट पर बाहर फैलने से हट जाए तो अंतर में बड़ी मीठी ध्वनि सुनाई देगी।

अमृत वाणी गुरु की मीठी॥

अंतर में जो अमर कर देने वाली वाणी हो रही है और जिस का ताल्लुक गुरु द्वारा मिलता है उस में बड़ी भारी मिठास है, उस में महा रस है :-

हर अमृत कथा श्रेष्ठ उज़म गुरु बचनी सहजे चाखी॥

हरि की जो कथा घट घट में हो रही है वह सब से उज़म है। वह अमर जीवन देने वाली कथा कौन सुन सकता है ? जिसे कोई अनुभवी पुरुष अंतर में उस से जोड़ दे। इसी लिए सच्चे गुरु की पल्टू साहिब ने तारीफ की है कि :-

धुन आने गगन ते सो मेरा गुरु देव।

इंद्रियों के घाट से नौ द्वारों से ऊपर आंखों के पीछे गगन है। इस गगन पर ला

कर उस आकाशवाणी से जो अपने आप आठों पहर हर इंसान के अंतर में हो रही है, जो अनुभवी पुरुष मेरी आत्मा को उस से जोड़ सकता है वही मेरा गुरुदेव है जिस में महारस है। उस रस को पा कर दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। यह तो हुआ एक पहलू, एक फेज़ और ज़्या है इस में ?

तहं भया प्रकाश अंधेरा ज्यों सूरज रैण कराखी॥

वहां प्रकाश हो रहा है जिस से अंतर का अंधेरा दूर हो जाता है।

नाम जपत कोट सूर उजेयारा॥

कि नाम के जपने से करोड़ों सूरजों का प्रकाश हो जाता है। पहले कहा कि वहां बड़ी मीठी मीठी ध्वनि हो रही है। उस का दूसरा फेज़ है कि वहां पर प्रकाश भी है, लाईट भी है। यह समझने की बात है। हम आंखें बंद करते हैं तो अंतर में अंधेरा है, इस अंधेरे में प्रकाश होने का सवाल है। गुरु लफ़्ज़ के मायने भी तो यही हैं, गो-रू- यानी जो अंधेरे में प्रकाश कर दे। गुरु के मिलने से पहले अंतर में अंधेरा था और गुरु मिलने के बाद भी अंधेरा है तो गुरु ज़्या मिला ?

अदृष्ट अगोचर अलख निरंजण सो देखेया गुरमुख आखी॥

वह अदृष्ट और अगोचर है, इंद्रियों का मज़मून नहीं। इंद्रियों के घाट से ऊपर स्थूल माया से ऊपर आकर गुरमुख इसे अपनी आंखों से देखता है। अब अमृत की सिफ़्तें आईं। एक तो बड़ी सुरीली ध्वनि, आकाशवाणी हो रही है। मौलाना रूम फरमाते हैं कि उन नगमों का जो घट घट में आप से आप हर वक्त हो रहे हैं अगर मैं थोड़ा साज़ कर दूं तो कब्रों में से मुर्दे जाग उठें। अब इस वक्त हम मुर्दे ही तो हैं जो जिस्म की लम्बी कब्र में पड़े हुए हैं।

मोह माया सबे जग सोया कोई विरला गुरमुख जागे॥

मोह माया में सारा जहान सोया पड़ा है। कोई गुरमुख किसी अनुभवी महापुरुष से, किसी आमिल पुरुष से दीक्षा ले कर इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने आप में जाग उठा, वह जागता है, बाकी सारा जहां मोह माया की नींद में सोया पड़ा है। गुरवाणी और निर्णय करती है:-

सतगुर विच अमृत है हर उज़म हर पद सोये॥

अनुभवी पुरुष में वह अमृत, वह नाम पावर प्रज़्ट है। मसीह ने कहा है word was made flesh and dwelt amongst us. वह नाम मुजस्सम होता है, वह पोल है जिस पर परमात्मा की ताकत काम करती है। वह mouthpiece of God (प्रभु का मुख) है, वह लोगों को इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर नाम से जोड़ता चला जाता है। यह उस का काम है :-

नानक किरपा ते हर ध्याइये गुरमुख पावै कोई॥

मालिक की खास दया हो तो नाम का ताल्लुक मिलता है। वह सत्गुर (मिले हुए को) से मिला देता है जो इंद्रियों के घाट से ऊपर ला कर उसे नाम से जोड़ देता है। सत्गुर की तारीफ ज़्या है ?

सत्गुर पुरख अमृतसर वडभागी नहावैं आये॥
तिन जनम जनम की मल उतरे निर्मल नाम द्रिड़ाये॥

वह अमृत का सरोवर है, बड़े भाग्य वाले लोग हैं जो इस अमृत के सरोवर में स्नान करते हैं। उन में अमृत बरस रहा है उन की रसना (ज़बान) में अमृत बरस रहा है। उन की ज़बान से जो लफ़्ज़ आ रहे हैं वे अमृत रस से चार्ज हो कर आ रहे हैं। वे दूसरों को भी ठंडक देते हैं। मौलाना रूम से किसी ने कहा कि आप जो शेयर कहते हैं उन में कई लफ़्ज़ वज़न से बाहर होते हैं। उन्होंने जवाब दिया :-

शेयर मी गोयम पुराज़ कंदो नबात।
मन ना दानम फाअलातन फाअलात॥

कि अमृत से भरे हुए मेरे वचन चले आ रहे हैं। उन के वज़न का नाप तोल,

तुम आप कर लो। यही गुरबाणी कहती है :-

अमृत बाणी गुरु की मीठी

अनुभवी पुरुष के लफ़्ज़ों में चार्जिंग है, टिकाव है, शांति है। संतों ने खोल-खोल कर ज़्यान किया है कि वह अमृत जिस की तारीफ आ चुकी है कहां मिलता है और कैसे मिलता है। गुरवाणी कहती है:-

नौ दरवाज़े नवें दर फीके एह अमृत दसवें चुवीजे॥

ये जो नौ दरवाजे हैं शरीर के जहां से हमारी सुरत बाहर दुनिया में फैल रही है, दो कान, दो आंखें दो नासिका, मुंह और दो (नीचे) के दरवाजे ये नवें दर इस अमृत से खाली हैं। वह अमृत दसवें दरवाजे में जा कर मिलेगा, वह दसवां दरवाजा कहां है।

नौ दरवाजे प्रगट किये दसवां गुप्त रहाया॥

यह नौ दरवाजे तो प्रज़्ट हैं दसवां गुप्त दरवाजा है। जब तक उन नौ दरवाजों में हम बैठे हैं हमारी सुरत बाहर दुनिया में फैल रही है।

नौ दर देख जो कामण भूली वस्त अनूप ना पाई॥

जब तक हम इन दरवाजों में बैठे हैं हम उस अनूप वस्तु को, उस अमृत को जो अंतर में है, नहीं पा सकते। वह अमृत मिलता कैसे है ? किसी अनुभवी पुरुष से।

सो अमृत गुर पाही जियो॥

अनुभवी पुरुष ज़्या कहता है ? वह कहता है चलो अंतर। जब तक तुम इन नौ दरवाजों में बैठे हो तुम इस अमृत का रस नहीं ले सकते। अमृत को पाने के लिए इंद्रियों के घाट से हटना होगा। आंखों के पीछे वह गुप्त दरवाजा है जहां आकर तुम उस अमृत रस को पा सकते हो। गीता के छठे और आठवें अध्याय में भगवान कृष्ण ने इस रास्ते का इशारा दिया है कि दो भ्रुमध्य, नासिका के अग्र भाग, दोनों आंखों के ऐन बीच में आंखों के पीछे नाक की सीध में वह गुप्त रास्ता है, जो पिंड (जिस्म) से अंड और ब्रह्मण्ड को जाता है, निज घर जाने का रास्ता है। अमृत रस है तो इस के अंतर में मगर कोई अनुभवी इसे उस का अनुभव दे तभी यह उसे चख सकता है।

अमृत सतगुरु चवाया
दसवें दवार प्रगट होया॥

सत्गुरु इस रस को चुवाता है। वह रस गिरने लग जाता है :-

तहं अनदिन शज़्द वज्जे धुन बाणी सहजे सहज समाये॥

उस में ध्वनि हो रही है जिस के साथ लगने से तुम सहज में समा जाओगे जहां से वह आ रही है। मालिक से मिलने का सहज ज़रिया शज़्द, बाणी या नाम के साथ लगना है। बड़ा खोल के ज़्यान किया है इस मज़मून को संतों ने कि वह अमृत , वह नाम, शज़्द या ध्वनि ज़्या है ? कहां से मिल सकता है ? एक इशारा आता है कि सिकंदर के मुर्शिद खिज़र उसे आबे हयात के चश्मे पर ले गये। वहां बड़ा अंधेरा था, दो मार्ग हैं, एक परे मार्ग दूसरा शरे मार्ग। परे मार्ग बड़ा प्यारा मार्ग है मगर यह फैलाव का रास्ता है, इसमें आगे रास्ता नहीं मिलता, फैलाव में जकड़ के मर जाता है। शरे मार्ग में पहले अंधेरा ही अंधेरा है। इस अंधेरे के पार ध्वनि और प्रकाश है। तुलसी साहब ने इशारा दिया है, इस परर्दा-ए-सियाह के ज़रा पार देखना। थोड़ा सा रास्ता ज़ुले तो फिर खुलता ही चला जाता है। अमृत के बारे में आगे और निर्णय किया है कि वह कहां है ?

नौ निध अमृत प्रभ का नाम॥
देही में इस का बिसराम॥

हर किस्म की खुशियां देने वाला प्रभु का नाम जो अमर जीवन के देने वाला है वह इस छः फुट के इंसानी जिस्म के अंतर में है। ज़्या वह सब के अंतर में है ?

गुरबाणी जवाब देती है:-

जेते घट अमृत सब ही माहिं भावे तिसे पिलावे॥

वह अमृत सब के अंतर में है। वह घट घट में मौजूद है लेकिन जब तक मालिक दया न करे कोई उसे पा नहीं सकता। मालिक की दया न हो तो अनुभवी पुरुष नहीं मिलता। अनुभवी पुरुष न मिले तो यह इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर उस रस को पा नहीं सकता जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर ही मिलता है।

अंतर खोटा अमृत भरेया शज्द काढ पिए पनिहारी॥

गुरबाणी में जगह जगह निर्णय किया है कि अमृत इस के अंतर में है:-

घर ही में अमृत भरपूर है मनमुज्खां साद न आवही॥

वह अमृत इस के अंतर में है लेकिन जो मनमुख हैं, जिन्हें अनुभवी पुरुष नहीं मिला, जो मन इंद्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बने बैठे हैं, जिन्हें इंद्रियों के घाट से ऊपर आने का मौका ही नहीं मिला उन्हें इस अमृत की खबर नहीं।

ज्यों कस्तूरी मिरग न जाणे भ्रमदा भरम भुलाया॥

जैसे कस्तूरी हिरण के अपने अंदर होती है लेकिन वह खुशबू की तलाश में बाहर भटकता रहता है। जहां हवा के झोंके में कस्तूरी की खुशबू आती है हिरण उस के पीछे दौड़ता है, वह इधर उधर भटकता रहता है। बाहरमुखी जो थोड़ी बहुत खुशबू इंद्रियों के घाट पर मिलती है वह अपनी महवियत की खुशबू है। रस इस के अंतर में है लेकिन यह उसे बाहर तलाश करता है, कभी एक जगह कभी दूसरी जगह भटकता फिरता है और जीवन बरबाद कर के चला जाता है। शायर कहता है:-

यार मन खाना ओ मन गिर्द जहां मी बैनम।
आब दर कूज़ा मन तिश्ना लबां मी गरम ॥

कि वह मेरा प्यारा मेरे अंतर में था और मैं बाहर दुनिया में उसे तलाश करता फिरा। किस कद्र अफसोस की बात है कि अमृत का भंडार इस के अंतर में है और यह उस की तलाश में बाहर दुनिया में मारा मारा फिर रहा है। महात्मा हमें अंतर्मुख करते हैं। वे कहते हैं कि तुज़्हारे अंतर में निजानंद का भंडार है। बार बार वे यही हिदायत करते चले आये:-

सब कुछ घर में बाहर नाहिं॥

सब कुछ इस में है लेकिन यह बाहर उसे तलाश करता फिरता है और जीवन बरबाद कर के चला जाता है। सो गुरु नानक देव जी फरमाते हैं कि हर किस्म की खुशियां देने वाले जिस अमृत (अमर कर देने वाले) जल की खातिर तुम दुनिया में आये हो वह अमृत तुज़्हें किसी अनुभवी महात्मा से मिलेगा, किसी ऐसे गुरु से मिलेगा जो सत पद को प्राप्त कर चुका है। गुरबाणी को सहज में पढ़ जाने से उसकी हकीकत का पता नहीं चलता जब तक कि बाणी की इस्तलाहों (परिभाषाओं) की, उस की terminology की, पूरी वाकफियत न हो। फरमाते हैं कि वह अमृत है हमारे अंतर में लेकिन अंतर्मुख होने का राज़, अमृत का कंटैज़्ट किसी अनुभवी गुरु से ही मिलता है। इस अमृत में दो तजरबे हैं। एक तो बड़ी सुरीली ध्वनि जिस में महारस है, दूसरे प्रकाश है उस में। कितना वाजह करते हैं इस मज़मून को। वह अमृत मिलेगा कहां से ?

सो अमृत गुरु पाही जियो॥

और भी किसी जगह उसे पा सकते हैं, आगे जवाब देते हैं:-

छोड़ो वेश भेख चतुराई दुबिधा एह फल नाहिं जीओ॥

बड़ा आज़ाद कलाम है, श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं, जकड़ों को छोड़ दो कोई भी समाज हो उस के रस्मो-रिवाज को पूरा करो मगर रस्मो-रिवाज की गर्ज़ को देखो, उस के मकसद को समझ कर उसे पूरा करो। खाली शज़्लों और बनावटों की

जकड़ों में न रह जाओ। अब सिखों में पांच ककके हैं, कड़ा है, उसे धारण करने की ज़्या गर्ज़ है ?

तग न नारी तग न इंद्री॥

इंद्रियों पर काबू रखो, आंखों पर कंट्रोल रखो, दिल पर, आंज़ों पर, इंद्रियों पर सब पर कड़ा पहरा रखो। कंघा ज़्या है ? उस की गर्ज़ ज़्या है ? रोज़ self introspection (जीवन की पड़ताल) करो, अपने आप पर कंघा करो, जो भी खामियां तुज़्हारे अंतर में हैं उन्हें चुन चुन कर बाहर निकालो, उन्हें weed out करो। यह काम रोज़ करो। यह है कंघा करना। अब कच्छा लंगोटा धारण करने की गर्ज़ थी ब्रह्मचर्य धारण करना। हम रस्मो-रिवाज के चिन्ह चक्र, बाहरी निशान और अलामतें तो धारण कर लेते हैं उन की गर्ज़ पूरी नहीं करते। जिस का ब्रह्मचर्य कायम है जिस की इंद्रियां दमन हैं जो वाहेगुरु का भाना मानता हो, बताओ ऐसे सिख का कल्याण होगा कि नहीं। महात्मा हमें जकड़ों से आज़ाद करते हैं। वे यह नहीं कहते कि समाज को छोड़ दो, वे कहते हैं कि रस्मो-रिवाजों की जो गर्ज़ है उसे पूरा करो। खाली चिन्ह चक्रों में, शज़्लों और बनावटों की जकड़ों में न रह जाओ। अब मंदिरों में जो बाहर घंटा बजाते हैं उस का मतलब तो यह वाजेह करना था कि अंतर में ध्वनि हो रही है जो घंटे की आवाज़ से मिलती जुलती है। हम अंतर की ध्वनि से तो लगे नहीं, बाहर की जकड़ों में रह गये कि घंटा नहीं बजाया तो भगवान जागेंगे नहीं। रस्मो-रिवाज के सिलसिले में जो भी करो सच्चे दिल से करो, उस की गर्ज़ को पूरा करो। यह जो समाजों के चिन्ह चक्र हैं इन चिन्ह चक्रों को धारण करते जाओ, उन से जो गर्ज़ वाबिस्ता (छिपी) है उसे पूरा करने से परमार्थ के लिए ज़मीन तैयार हो जायेगी लेकिन कोई यह समझे कि किसी खास समाज की शज़्लें और उस के चिन्ह चक्र धारण करने से कल्याण होगा तो यह सोलह आने झूठ है। रविदास जी चमार थे, उन्होंने अनुभव पाया कि नहीं ? त्रिलोचन ब्राह्मण थे, नामदेव छींबा ज़ात से थे, सदना जी कसाई थे, श्री गुरु नानक साहब खत्री थे। अनुभव किसी खास समाज या जाति का अजारा नहीं। रस्में भी पालो, उन की भी ज़रूरत है। यसु मसीह से लोगों ने कहा कि तुम कहते हो कि मैं सच्चा बादशाह हूं और बादशाह हम से खिराज (टैज़्स) मांगता है, हम ज़्या करें। मसीह ने फरमाया, मुझे सिक्का ला के दो, वे सिक्का लाये तो मसीह ने पूछा, इस पर किस की मोहर है। लोगों ने जवाब दिया, बादशाह की। मसीह ने फरमाया तो फिर जो बादशाह का हक है वह उसे दो (give unto Ceasar) चिन्ह चक्र की जो गर्ज़ है उसे हासिल करो, ज़ाली शज़्लों की जकड़ों में रह गये तो कल्याण नहीं होगा। उन की गर्ज़ हासिल करने से हृदय की तैयारी होगी मगर अगली शै (चीज़) अनुज़वी पुरुष से, गुरु से ही मिलेगी। वह चीज़ है नाम, अमृत। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर न आये उस का ताल्लुक नहीं मिलता, ये वेष ज़ेख और समाजों के चिन्ह चक्र सब जिस्म से ताल्लुक रखते हैं। नाम का ताल्लुक जिस्म से ऊपर आकर मिलता है। श्री गुरु नानक साहब के पास साधु किंगरी बजाते हुए आये। उन्होंने ने फरमाया :-

नानक सा किंगरी बजाओ
जित हर स्यों लिव लाए॥
किंगरी अनूप बाजे
जोगिया मतवारो रे॥

यह बाहर की किंगरी ज़्या बजा रहा है। अंतर में किंगरी की जो ध्वनि हो रही है उस से लगो। उस ध्वनि को सुन कर प्रभु से तुज़्हारी लिव लगेगी, प्यार पैदा होगा।

यह जो माथे पर तिलक लगाने का रिवाज है कई किस्म के तिलक लगाये जाते हैं। मसलन सीधी लकीरें, मतलब यह है ईड़ा, पिंगला, सुषमना तीन हैं। दरमियान की नाड़ी सुषमना है। उस के पार जाने की यह अलामत (निशानी) है। जितनी किसी की रूहानी रसाई होती थी उस के मुताबिक माथे पर तिलक लगाये जाते थे जिस से पता लग जाता था कि कौन किस जमात में है और एक दूसरे से मिलने जुलने और तबादला-ए-ज़्याल में आसानी रहती थी। अब महज एक रस्म बाकी रह

गई है, पहुंचे कहीं भी नहीं और तिलक के चिन्ह चक्र सजाने में आधा घंटा लग जाता है। संत महात्मा दुनिया को इन जकड़ों से आज़ाद करते हैं। वे न चिन्ह चक्रों के खिलाफ हैं न समाजों के, वे जकड़ों के खिलाफ होते हैं। वे आप आज़ाद होते हैं और दुनिया को आज़ाद कराने आते हैं। वे चीज़ को सही नज़र से देखते हैं और दुनिया को सही नज़री देते हैं। श्री गुरु नानक साहब की जनेऊ धारण करने की रस्म होने लगी तो उन्होंने ज़्या कहा। जागृत पुरुष की नज़र देखो कि वह किस नज़र से देखते हैं। जनेऊ में खास तारें होती हैं, उन का खास मतलब है। श्री गुरु नानक साहब ने फरमाया :-

दया कपाह संतोख सूत जत गंढी सत वट॥
एहा जनेऊ जीये का है तां पांडे घत॥
ना एह तुट्टे ना मल लग्गे न एह जले न जाये॥
धन सो माणस नानका जो गल चल्ले पाये॥

दया की कपास हो, संतोष का सूत, ब्रह्मचर्य की गांठ और सत की उस सूत में बाट दो। यह जी का जनेऊ है, यह कभी जले न मैला हो। संत यह नहीं कहते कि जनेऊ धारण कर दिया, न करो। वे कहते हैं कि जनेऊ धारण करने की जो गर्ज़ है उसे भी पूरा करो। अगर वेषों भेखों के धारण करने या बदलने से प्रभु मिलता है तो हम उस की तलाश में आज बाहर न भटकते। संत हमें हर चीज़ को सही नज़री से देखना सिखाते हैं। किसी भी समाज में रहो उस समाज के सिद्धांत के जो सदाचार के नियम हैं उन को पूरा करो, जकड़ों में न पड़ो, यह चतुराई और दुविधा का कारण बन जाती है। रस्मो-रिवाज की गर्ज़ को देखो। अब ईसाइयों में नंगे सिर बैठना अदब की निशानी है। वे गिरजे में नंगे सिर बैठते हैं। गुरद्वारे में सिर पर पगड़ी रख कर बैठना अदब की निशानी है। जो जकड़ों में पड़े हुए हैं वह ज़्या करते हैं, गुरद्वारे में नंगे सिर बैठो तो वह कहते हैं सिर उतार देंगे और गिरजे में सिर ढांप कर बैठो तो वे कहते हैं कि सिर उतार देंगे। भई मकसद को देखो, दोनों का यही मकसद है कि खुदा के हजूर में बाअदब हो के बैठो। वैसे देखो तो परमात्मा कहां नहीं, जहां उस के हजूर में पूरी श्रद्धा और भाव सहित बैठो वही जगह मंदिर है, वही मस्जिद है, वही गिरजा है, वही गुरद्वारा है। कई भाई यहां आकर पूछते हैं कि आप ने मंदिर कहां बनाया है। नीचे जमीन है ऊपर आसमान है। यहां मैंने कोई खास मंदिर नहीं बनाया यह अनुभवी पुरुष की कृपा है जो लोगों को फैज़ मिल रहा है। वह आज़ाद करने आया था, आज़ाद कर गया। एक दिन की भी छुट्टी मिल जाये बच्चों को तो कितनी खुशी होती है, बच्चे खुशी से उछलते हैं, कूदते हैं। जकड़ों में दुविधा है, दुख है। किसी भी समाज में रहो वह समाज तुज़्हें मुबारिक मगर उस समाज में रहते हुए इतने ऊपर उठ जाओ अपने कि सारी दुनिया तुज़्हारा समाज बन जाये। एक पीले कपड़े पहन कर प्रभु के गुण गा रहा है, एक नीले कपड़े पहन कर गा रहा है। मुखतलिफ भेसों में और मुखतलिफ ज़बानों में उसी प्रभु के गुणानुवाद ही तो गाये हैं।

सैंकड़ों आशिक हैं दिला राम सब का एक है।
मज़हबो मिल्लत जुदा हैं काम सब का एक है॥

हम उस चीज़ को भूल गये हैं कि हिन्दू का खुदा और है और मुसलमानों का खुदा और। चार शराबी आपस में मिले तो एक दूसरे को देख कर उन में जान पड़ जाती है। किसी तरह आपस में गले मिल कर बैठे हैं एक प्रभु का नाम लेने वाले। प्रभु प्रेम के मतवाले जकड़ों में पड़ कर एक दूसरे को बुरा भला ज़्यों कहें। यह किन का वतीरा है ? जो लोग पिंड से, जिस्म से ऊपर नहीं आये जिन की अंतर की आंख नहीं खुली जिस से सब में परमात्मा का जलवा नज़र आता है। श्री गुरु अर्जुन देव साहब, हज़रत मियां मीर और छज्जू भक्त तीनों अनुभवी महापुरुष एक ज़माने में हुए। उन का आपस में कितना प्यार था ? श्री गुरु अर्जुन साहब ने ग्रंथ साहब के लिए बाणियां एकत्र की तो ज़्या कसौटी रखी, जो भी अनुभवी महात्मा हुए उन सब के कलाम उस में शामिल किए। चुनांचे ग्रंथ साहब में नामदेव छींबा, कबीर जुलाहा है, रविदास जी चमार, सदना कसाई, सैना नाई तक के श्लोक मिलते हैं। जब वर्णों की बुनियाद रखी गई थी तो यह पाबंदी नहीं लगाई गई थी कि ब्राह्मण का बेटा ही ब्राह्मण होगा, वर्णों की तकसीम कर्म के मुताबिक की गई थी लेकिन बाद में यह

चीज़ पैदा हो गई कि ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण और शुद्र का बेटा शुद्र होगा। पानी जब निकलता है तो साफ होता है, आगे चल कर उस में आलायशें (मैलें) ाामिल हो जाती हैं। परमात्मा ने किसी को मोहर लगा कर नहीं भेजा कि यह हिन्दू है यह मुसलमान है, उस ने तो इंसान बनाए। यह जात पात के लेबल हमारे लगाए हुए हैं। यह एक अनुभवी पुरुष का आज़ाद कलाम है जो अकल सीम common sense भी अपील करता है। श्री गुरु नानक साहब एक जगह पर फरमाते हैं :-

पंथा प्रेम न जाणई॥

कि जो पंथों की, समाजों की और उनके रस्मो-रिवाज की जकड़ों में हैं वे प्रेम की सार ज़्या जाने। यहां फिर एक बात को वाजेह (स्पष्ट) कर दिया जाये ताकि किसी भाई को गलतफहमी न रहे कि समाजों और उनके रस्मों रिवाजों की मुखालफत हमारा मकसद नहीं, किसी भी समाज में रहो तुज़्हें मुबारिक। समाज के जो रस्मो-रिवाज या चिन्ह चक्र हैं जिस गर्ज़ से यह बनाए गए हैं उस गर्ज़ को हासिल कर लो। खाली चिन्ह चक्र धारण करने से तुज़्हारा कल्याण नहीं होगा। संतों का नजरिया यह है कि वे न किसी की तारीफ करते हैं न निंदा। वे हर चीज़ को सहीनज़री से देखते हैं और जिस चीज़ की जितनी कीमत है उतनी ही उस की कीमत डालते हैं। उन की तालीम आज़ाद होती है। वे कहते हैं कि जिस समाज में हो तुज़्हें मुबारिक। समाजों के नियमों का पालन करते हुए सदाचार का जीवन बनाओ। यह परमार्थ के लिए ज़मीन की तैयारी है। आगे अमृत हासिल करने के लिए सब भाइयों को ज़्वाह वे किसी समाज से ताल्लुक रखते हों किसी अनुभवी पुरुष के पास जाना होगा। अनुभवी पुरुष सब समाजों को अपनी समाज समझते हैं, सब से प्यार रखते हैं। यही वजह है कि जब ऐसे महापुरुष चोला छोड़ते हैं तो हिन्दू कहते हैं कि वह हिन्दू थे, मुसलमान कहते हैं कि वह मुसलमान थे। वे सारी दुनिया को रोशनी देने आते हैं, वे खुद आज़ाद होते हैं, दुनिया को आज़ाद कराते हैं। इसी लिए कहा है कि जिस ने गुरु को जान लिया वह अभय हो गया। हम ने अनुभवी पुरुष को जाना ही नहीं। हजूर को कई भाइयों ने जाना ही नहीं, वह आज़ाद पुरुष थे। उन का फरमान था कि कोई ऐसी common ground (सांझी जगह) बनाओ जहां सब इंसान ज़्वाह किसी जमात, धर्म या समाज से ताल्लुक रखते हों, एक जगह मिल कर बैठ सकें। दुनिया जकड़ों में इतनी उलझ के रह गई है कि कोई ऐसी मुशतरका (सांझी) जगह ही नहीं रही। हजूर ने फरमाया कि वहां किसी बोले नारे की कोई जकड़ न रखे, राम राम कहो, सत श्री अकाल कहो, अपने बोले सब को मुबारिक। उन्हीं महापुरुष के फरमान की तामील हो रही है। यह जगह सब की सांझी है जहां हजूर की दया से सब को फैज़ मिल रहा है। यह धर्म ग्रंथ ज़्या हैं ? एक banquet hall of spirtuality हैं। खाली अक्षरों का फेर है ज़्यान तो सब उसी हकीकत को कर रहे हैं, सब उस प्रभु का गुणानुवाद कर रहे हैं। जिसे प्रभु से प्यार है उस का सब से प्यार होगा। अब सिख कहें कि सिख मत सब से ऊंचा है। ईसाई कहें कि ईसाइयों के इलावा और कहीं कल्याण नहीं। भई जो भी महापुरुष की तालीम को धारण करेंगे, उसे अमल में लायेंगे उन सब का कल्याण होगा मगर शर्त अमल की है। Be the doers of the word and not the hearers alone. हम ने word की, नाम, शज़्द आकाशवाणी, ध्वनि, उदगीत, किसी नाम से उस रमी हुई घट घट व्यापी ताकत को ज़्यान कर लो, की पूजा करनी थी, उस के साथ लगना था, 'L' का इज़ाफा कर दिया, हम word जगह world के पुजारी बन गये, दुनिया की जकड़ों में फंस के खुदा से दूर हो गये। अनुभवी पुरुष हर चीज़ का right import (सही मूल्य) दुनिया के सामने रखते हैं। अगर हम जकड़ों में रह जायें तो इस का नतीजा ज़्या होगा ? दुविधा बढ़ेगी, आपस की कशमकश बढ़ेगी, clash between class and class होगा । फिर अपना-अपना पक्ष सिद्ध करने, अपनी बरतरी (बड़ाई) साबित करने के लिए चतुराई से काम लेंगे। भई इंसान का जिस्म प्रभु का ग्रंथ है, इस को खोजो। जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आए और अपने आप को जिन्होंने जान लिया उन्होंने प्रभु को जान लिया। यह सब से ऊंचा आदर्श है। श्री गुरु नानक साहब के पास फकीर आये। उन से बातचीत होने लगी, आप ने फरमाया:-

आई पंथी सगल जमाती मन जीते जग जीत॥

योगियों में आई पंथ सब से ऊंचा पंथ है। श्री गुरु नानक साहब ने फरमाया कि हर इंसान अपने आप को जानने और प्रभु को पाने की तलाश में है। यह इल्म है जिसे हासिल करने के लिए हर इंसान दुनिया में आया। प्रभु को पाने का इल्म हासिल करने की जमात में हर इंसान दाखिल है और इस लिहाज़ से सब इंसान हम-जमात (सहपाठी) हैं। यही सब से बड़ा पंथ है और इस पंथ का सब से बड़ा और आदर्श है कि मन को जीत लो तो सारी दुनिया को तुम जीत लोगे। सब इंसान चाहे वह किसी मज़हब या समाज से ताल्लुक रखते हों इस जमात में दाखिल हैं। All humanity is one, दशम गुरु साहब फरमाते हैं :-

मानस की जात सबै एकै पहचानवो॥

जो इस हकीकत को जानने वाला है वह सब से ऊंचा है। It is better to be bron in a temple but to die in it is sin. इंसान किसी न किसी समाज में पैदा होता है। समाजों की, कोई भी समाज हो, रस्मो-रिवाज की गर्ज़ तो यह है कि इंसान नेक पाक जीवन बसर करे, सदाचार धारण करे, इंसान इंसान के काम आये और वह एक good world citizen (अच्छा नागरिक) बन जाए लेकिन यह सब कुछ करते हुए अमृत को, अमर जीवन देने वाले नाम को पाने के लिए किसी अनुभवी गुरु के पास जाना होगा। वह अमृत घट घट में है मगर मनमुखों को, जिन्हें अनुभवी गुरु नहीं मिला उस की सार नहीं मिलती। श्री गुरु अर्जुन साहब ने जब अनुज़वी पुरुषों की वाणियां एकत्र कीं तो फरमाया :-

प्यो दादे का खोल डिट्ठा खज़ाना॥
तो मेरे मन भया निधाना॥

यह जो धर्म ग्रंथ हैं यह हमारे बाप दादा का विरसा हैं। उन्हें पढ़ कर उन का तात्पर्य समझने और उन की तालीम को ग्रहण करने की ज़रूरत है, खाली जकड़ों से काम नहीं चलेगा।

मन रे थिर रहो मत कित जाई जीओ॥
मन रे थिर रहो मत कित जाई जीओ॥

अब फरमाते हैं कि अमृत घट घट में मौजूद है लेकिन उसे पाने के लिए मन को स्थिर करना होगा उसे खड़ा करना होगा।

अमृत मन ही माहिं पाईये गुरु प्रसाद॥

अमृत को पाने के लिए मन को स्थिर करो, उसे कहो तू बाहर ज़्यों भागता फिरता है, तू बाहर न भाग, तू लज़्ज़त का आशिक है, लज़्ज़त की तलाश में तू जो बाहर दौड़ता फिरता है, तू अंतर चल। तेरे अंतर में महारस है, निजानंद का भंडार है, नज़ारे सुन्दर दृश्य दूसरे राग वगैरा। मन से कहो कि तू अंतर चल, तेरे अंतर में वह राग रंग हैं जिन्हें सुन के मुर्दे कब्रों से जाग उठें। ऐसे सुहाने नज़ारे हैं जो लाज़्यान हैं। जिन्होंने उस लज़्ज़त को पाया है उन्होंने दुनियावी मिसालें दे कर उस कैफियत को वाजह करने की कोशिश की है :-

ज्यों कामी काम लुभावै॥
त्यों हर जन हर जस भावै॥

बड़ी भद्दी मिसाल है, कहां काम, कहां नाम की लज़्ज़त लेकिन और कोई दुनियावी मिसाल नहीं। टूटे फूटे फूस की झोंपड़ियों वाला कोई गांव हो, जहां किसी ने कोई पक्का मकान भी न देखा हो, उन के सामने महल की शान शौकत बयान करो तो ज़्या लज़्ज़ इस्तेमाल करोगे ? ज़्यान है, लज़्ज़ों में ज़्यान नहीं हो सकती। दुनिया की कोई मिसाल उस को वाजह नहीं कर सकती।

जब ओह रस आवा॥
एह रस नहीं भावा

अंतर की इस लज़्ज़त को, नाम के महारस को पा जाओ तो दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। इस लज़्ज़त को पाकर बड़े बड़े राजा महाराजा दुनिया को लात मार कर चल दिये। आखिर कोई लज़्ज़त थी नाम में, हज़रत इब्राहीम अधम बादशाह थे, जब यह रस आया तो राज पाट छोड़ दिया और जा कर दरिया-ए-दजला के

किनारे बैठ गये। अमीर वज़ीर उन्हें वापस लाने के लिए गये तो फरमाया कि दुनिया मेरे आगे हेच (बेकार) है। जब लोग पीछे पड़े तो उन्होंने चुपके से एक सूई दरिया में डाल दी और कहा कि सूई वापिस लाकर मुझे दो। बहुतेरी तलाश की लेकिन दरिया में से एक सूई का निकालना अमर मुहाल (मुश्किल) है। लोगों ने कहा इस एक सूई के बदले दस हज़ार सूइयां ले लीजिए मगर वह अड़े रहे कि मुझे तो वही एक सूई चाहिए। इतने में उन्होंने तवज्जो दी तो एक मछली दरिया में से वही सूई अपने मुंह में ले कर आ गई। हज़रत इब्राहीम अधम बोले मेरी यह बादशाहत दुनिया की बादशाहत से बढ़ कर है जिसे मैं छोड़ आया हूं। जिस ने ज़िंदगी का मुअज़्मा हल कर लिया, जो जिस्म के ऊपर आकर हमेशा की ज़िंदगी पा गया कुदरत उस के इशारे की मुंतज़र (इंतज़ार में) रहती है। वह उस की beck and call पर रहती है।

वह counsecious co-worker हो जाता है, वह जिंदा जावेद हस्ती होती है। ऐसे महापुरुष की महिमा सारे वेद शास्त्र धर्म ग्रंथ वर्णन करते चले आये हैं।

मैं शुरु से ही inquistive nature का था, नौवीं जमात में पढ़ता था तो मैंने एक मरतबा अपने उस्ताद से, जो पादरी थे, पूछा लोग महात्माओं और महापुरुषों के आगे बड़े लकवलकाब लगाते हैं, जैसे श्री महाराज, क्त वगैरा, आप अपने पैगज़्बर को सिर्फ यसू कहते हैं। इस का ज़्या कारण है ? उन्होंने मेरे सवाल का बड़ा सुंदर जवाब दिया। कहने लगे परमात्मा जो सब से बड़ा है वह सब का खालिक़ और मालिक है, उस के नाम के साथ भी हम ने कभी कोई लकाब लगाया ? कभी किसी को खुदा साहब या श्री हजूर परमात्मा महाराज कहते सुना है। मसीह को हम खुदा का बेटा मानते हैं। खुदा के नाम के साथ कोई खिताब लकाब नहीं लगाया जाता तो मसीह के नाम के साथ ज़्योंकर लगाया जा सकता है ? जैसे परमात्मा की कोई तारीफ नहीं की जा सकती है जो मालिक में अभेद हो गये हम उन की महिमा ज़्या जान सकते हैं ?

दिली रा दिली मी शनासद

जो जिस्म जिस्मानियत की कैद में हैं वे आसमानों पर परवाज़ करने (उड़ने) वालों की महिमा को ज़्या जान सकते हैं। जो दूसरों को भी तजरबा देते हैं आत्म अनुभव का, ऐसे ही अनुभवी महापुरुषों के वेद शास्त्र, धर्म ग्रंथ और ऋषि मुनि महात्मा जो आज दिन तक आये, गुणानुवाद गाते आये हैं।

बाहर ढूंढत बहुत दुख पावही
घर अमृत घट माहीं जीओ॥

फरमाते हैं कि वह अमृत तेरे अपने अंतर में है और तू उसे बाहर तलाश कर रहा है। उसका नतीजा दुख के सिवाय और ज़्या हो सकता है ? दुनिया की लज़्त हासिल करने के लिए तो हर शज़्स की खुशामद करता फिर रहा है।

सेव करे जन जन की

उस लज़्त की तलाश में कभी इधर, कभी उधर मारा मारा फिर रहा है लेकिन दुनिया में सुज़ कहां ? इस निजानंद का भंडार तो तेरे अपने अंतर में है।

बाहर टोले सो भरम भुलाहिं
हर अमृत घट माहिं जीओ॥

घट घड़े को भी कहते हैं और इस जिस्म को भी। फरमाते हैं अमृत इस जिस्म के अंतर में है, इस में जाओ। जो जीते जी मर के इंद्रियों के घाट से ऊपर आ गए वे हमेशा की ज़िंदगी देने वाले इस अमृत को पा गए :-

जो जन मर जीवे तिन अमृत पीवे मन लागा गुरमत भाओ ॥

जो जीते जी मर के इंद्रियों के घाट से ऊपर आता है और उस अमृत को पीता है वरना

आब दर कोह दमन तिशना लबां मी गुरदम॥

पानी इस के अंतर में है और यह बाहर प्यासा भटकता फिरता है। Water water everywhere yet not a speck of it. वह ज़िंदगी का पानी है जिस के पीने

से सारी प्यास मिट जाती है।

औगुण छोड़ गुणां को धावो कर औगण पछताई जीओ॥

इस अमृत को पाने के लिए ज़्या करना चाहिए? अवगुण छोड़ दो नेक पाक जीवन बना लो। Ethical life is stepping stone to spiritruality, पहली ज़रूरी चीज़ है कि अवगुणों को छोड़ दो और अपने जीवन की पड़ताल करो। जो भी खामियां तुज़्हारे अंतर में हैं अपनी खामियां, shortcomings चुन चुन के निकालते चलो। माफ करना हमें यह पता भी नहीं कि हमारे अंतर ज़्या खामियां हैं, अपने आप पर कज़ी नज़र नहीं गई। दाराशिकोह कहता है कि हमें चाहिए कि हम अपने आप के खुद फकीर बनें। अब हमें प्रभु का जलवा अंतर में ज़्यों नज़र नहीं आता। कोई प्याला हो, उस में मैला पानी भरा हुआ हो, उस प्याले में सुराख हों जिन से बाहर की हवा प्याले के अंदर आ रही हो और पानी में हर दम बुलबुले उठते रहते हों, बताओ उस पानी में अपना अज़्स नज़र आयेगा? अपना अज़्स उस प्याले में देखने के लिए हमें सब से पहले वे सुराख बंद करने होंगे जिन से हवा अंदर आ रही है और पानी में बुलबुले उठा रही है। जब पानी में लहरें उठनी बंद हो जायें तो फिर मैल छांटने के लिए उस में फिटकरी डाल दो। पानी शांत हो गया, उस की मैल छट गई तो फिर उस में चेहरा नज़र आएगा कि नहीं। इंद्रियों के घाट से बाहर की हवा हर दम हमारे अंदर आ रही है। जिस से मन में हवाएं उठ रही हैं अंदर आगे ही जन्म जन्म की मैल भरी पड़ी है:-

जन्म जन्म की इस मन को मल लागी काला होया स्याह।

पहली चीज़ यह है कि इंद्रियां दमन हो ताकि बाहर की हवा अंदर आकर मन में हिलोरें पैदा न करे। आंख, कान, ज़बान वगैरा पांचों ज्ञान इंद्रियों को रोको। इन में तीन इंद्रियां बहुत ज्यादा प्रबल हैं, आंख, कान और ज़बान की इंद्रियां। ज्यादातर हिलोरें इन्हीं इंद्रियों के ज़रिये उठती हैं। शायर कहता है:-

चश्म बंदो गोश बंदो लब बर बंद।
गर न बीनी सिररे हक़ बर मन बिखंद॥

आंखों को बंद कर, कानों को बंद कर, ज़बान को बंद कर, तीनों इंद्रियों को रोको अगर इस के बाद तुझे हकीकत का राज़ मालूम न हो तो फिर मेरी हंसी उड़ाना।

जो हिलोरें मन में उठ रही हैं उन में -ख्र प्रतिशत इन तीनों इंद्रियों के ज़रिये उठ रही हैं। इन इंद्रियों को रोकने के लिए मन में हिलोरें उठनी बंद हो जायें तो थोड़ी अपने आप को होश आए और फिर किसी अनुभवी पुरुष से नाम की फिटकरी मल लो जिस से जिस्म की मैलें छट जायें तो अंतर में परमात्मा का जलवा नज़र आने लगे।

घर ही बैठे शौह मिले जे नीयत रास करे।

कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं, बाहर से हट कर उस की तरफ रुख करने की ज़रूरत है।

पूरा सत्गुर भेटिये पूरी होवे जुगत॥

दुनिया को छोड़ने, घरबार त्याग कर जंगलों में जाने की ज़रूरत नहीं, थोड़ा self discipline (आत्म संयम) चाहिए। चौबीस घंटे दुनिया का काम करते हो, थोड़ा वक्त अपने काम के लिए भी दो। दुनिया और दुनिया के काम धंधे तुज़्हारे साथ नहीं जाएंगे, आखिर यह छोड़नी पड़ेगी। ये सिलसिले तुज़्हारे साथ नहीं जाएंगे।

हंस अकेला जाई

हम लोग दुनिया का काम करते हैं। अपना काम नहीं करते, दुनिया के धंधों में उम्र बीत जाती है, जीवन बरबाद चला जाता है। बड़े आदमियों को देखा, लाहौर में प्रोफैसर गुलशन राय थे, सारी उम्र लोगों की सेवा करते रहे, बड़ी नेक रूह थी। उन

के अंत समय मैं हस्पताल में उन के पास था। कहने लगे I feel very strong. मैंने कहा नेपोलियन भी यही महसूस करता था लेकिन बाद में वही कहता था कि मैं जिस के डर से सारा यूरोप कांपता था आज मैं आंख खोलना चाहूं तो भी नहीं खोल सकता। इतनी ताकत भी नहीं रही मुझ में। खलीफा नेमत राय वकील मेरे साथ थे, मैंने उन से कहा जो वसीयत वगैरा लिखवानी है अभी लिखवा लो, फिर शायद वक्त न मिले। वह बोले अभी तो यह भले चंगे हैं, इतनी जल्दी ज़्या है, फिर लिखा लेंगे। मैंने कहा अभी लिखवा लो जो लिखवाना है। थोड़ी देर के बाद मैंने कहा, आंखों के पीछे हटो, और हटो, रूह जिस्म से ऊपर आ गई, वसीयत पर दस्तखत कौन करे। दुनिया भर के काम हम करते रहे सियासी, इखलाकी, समाज सुधार वगैरा का काम, घरबार का, समाजों का काम, अपना काम न किया तो ज़्या किया।

बिन बूझे मुगध अंजाण॥

यह अनजान है या फिर मूढ़ है कि पढ़ने लिखने समझाने बुझाने के बावजूद नहीं समझता है। अपने जीवन की रोज़ पड़ताल करो, गिन गिन कर अपने खामियों को बाहर निकालो, इस काम में बड़ा लुत्फ है, मैंने कर के देखा है। स्कूल के ज़माने से मैं अपनी डायरी लिखता चला आ रहा हूं। शुरु शुरु में तो कोई अवगुण नज़र आता ही नहीं हमें । हम कहते हैं कि उस ने हमें एक थप्पड़ मारा। हम ने एक के बदले दो मार दिए, भला इस में हमारा ज़्या कसूर है। फिर जैसे जैसे महात्माओं की बाणी पढ़ी और उसके तात्पर्य को समझा किसी का दिल न दुखाओ, सत को धारण करो, सब के अंतर में परमात्मा है इस लिए सब से प्यार रखो, निष्काम सेवा करो वगैरा। जब इस मियार पर जिंदगी को परखा तो अवगुण बढ़ने लगे, हकीकत में वह बढ़े नहीं, अवगुण पहले ही मौजूद थे, पहले उन का बोध नहीं था। अपने जीवन की पड़ताल करो तो पहले पाप बढ़ते हुए मालूम होते हैं। बढ़े नहीं मौजूद तो पहले ही थे मगर हमें पहले अहसास नहीं था। जब आदमी यह महसूस करे कि वह गंदगी के ढेर पर बैठा है तो वह ज़रूर वहां से उठने का यत्न करेगा, इस लिए self interospection पहला कदम है। हाफिज़ साहब का कायदा था कि वह कोई गलती करते तो यादाश्त के लिए एक रोड़ा उठा कर फेंक देते। थोड़े दिनों में देखा कि कंकरों का एक बहुत बड़ा ढेर सामने लग गया। कहने लगे, या खुदा मैं इतने पाप कर रहा हूं। हमें अपनी खामियों का अहसास नहीं तो उसे दूर कौन करे इसी लिए मैं बार बार इस बात पर ज़ोर देता हूं कि अपनी डायरी रखो when I say a thing, I mean a thing मैं बिला वजह यह बात नहीं कहता, इस में बड़ी भारी बरकत है, इस से तुझ्हें टिकाव मिलेगा। नाम को फिलहाल छोड़ दो, नाम बड़ी ऊंची चीज़ है। खाली हृदय साफ हो जाये तो अंतर्यामता हासिल हो जाती है। ऐसे हृदय पर अनुभवी पुरुष की कृपा से नाम का वह रंग चढ़ेगा कि मज़ा आ जायेगा। मैले कपड़े पर भी कभी रंग चढ़ता है ? हम लोग ज़हर भी कभी खाते जाते हैं और हाय हाय ज़ी करते जाते हैं। हम अवगुण छोड़ते नहीं, निंदा या बखीली, धड़ेबंदी, दूसरे का हक मारना, ये सारे काम करते हुए साथ में राम राम भी करते जाते हैं। लोगों के आगे हम कैसे ही नेक पाक बन जाएं मगर वह खुदा अंतर में हमारी हर हरकत देखता है, उसे तो हम धोखा नहीं दे सकते।

लोक पतीने कछु न होवे

हमारे हजूर फरमाया करते थे कि वह ताकत जो घट घट में बैठी है वह अभुल्ल है, जब तक साफ न हो, अंतर में रास्ता नहीं खुलता। नियत रास हो तो वह खींचने वाला जो अंतर में बैठा है ज़रूर खींचता है। जैसे बैलून बोरियों से जकड़ा हो तो ज़मीन से बंधा रहता है। रस्सियां कट जायें तो वह आसमान पर परवाज़ करने लगता है। हमारी रूह भी रस्सियों से जकड़ी हुई है, ये रस्सियां कट जायें तो वह अपनी असल जगह की तरफ परवाज़ करेगी। दशम गुरु साहब फरमाते हैं :-

वैर विरोध काम क्रोध लोभ।
झूठ विकार, महालब, धरो॥
एहा जुगत बिहाने कई जन्म।
नानक राख लेहो आपन कर करम॥

यही विकार जन्म मरण के बंधन का कारण हैं। रूह तो रोज़ परवाज़ करेगी लेकिन इस के लिए जीवन की पवित्रता ज़रूरी है। हज़रत मसीह फरमाते है, Blessed are the pure in heart for they shall see God. हम base (बुनियादी) चीज़ यानी जीवन की पवित्रता पर तवज्जो नहीं देते, higher चीज़ यानी परमार्थ को पाना चाहते हैं। कुज़ा भी ज़मीन पर बैठता है तो पूंछ से जगह को साफ कर के बैठता है। कोई मामूली अफसर घर आ रहा हो तो हम कितनी सफाई करते हैं। हम यह चाहते तो यह हैं कि वह शहन्शाहों का शहन्शाह हमारे अंतर में प्रज़्ट हो और हृदय हमारे मैले हों तो यह ज़्योंकर मुमकिन है ? जो अब तक पाप करते चले आ रहे हैं उन के लिए उज़्मीद है अगर वह आगे के लिए तोबा कर लें और कहीं खड़े हो जायें। They must stop somewhere. मसीह के पास एक स्त्री को ले गये, उस ने व्यभिचार किया था। उन्होंने लोगों से पूछा, तुज़्हारी शरीयत ऐसी औरत के बारे में ज़्या हुज़्म देती है ? लोगों ने कहा हम तो ऐसी औरत को पत्थर मार मार कर संगसार कर देते हैं। मसीह ने फरमाया, बहुत खूब, अपनी रस्म पूरी करो मगर पहला पत्थर इस औरत को वह मारेगा जिसने ज़िंदगी में कोई गुनाह न किया हो। अब कौन सीने पर हाथ रख कर कह सकता है कि उस ने कोई गुनाह नहीं किया। सब खड़े रह गये। फिर उस गुनाहगार औरत को मुखातिब कर के मसीह ने कहा do no more, आईंदा ऐसी हरकत न करना। हज़ारों की संगत में हजूर के सामने कोई शज़्स आकर अपने गुनाह का ऐतराफ (कबूल) करता तो वह फरमाया करते कि इतने आदमी यहां बैठे हैं उनसे पूछ, कोई तेरा गुनाह अपने सिर लेता है ? अब गुण तो सभी ग्रहण कर लेते हैं; दूसरे के पाप का बोझ सिर पर कौन उठाए ? फिर हजूर हाथ ऊपर उठा कर कहते, अच्छा अब आगे ऐसा मत करना।

मैल धोने के लिए नाम का महामंत्र है जिस से जन्म जन्मांतर की मैल धुल जाती है। मालिक से प्रार्थना करो कि ऐ मालिक, दया कर के हमें बज़्श दो। आईंदा के लिए बाज़ आ जाओ तो बज़्श दिये जाओगे।

लुकमान एक जमींदार के पास एक नौकर था, एक दिन मालिक ने लुकमान को कहा कि barley oats जा कर बोओ। यह उमदा मोटे जौ की एक किस्म है, एक मामूली जौ होते हैं एक बारले ओटस। लुकमान ने बारले ओटस की बजाय मामूली जौ बो दिये। फसल तैयार हो गई तो मालिक ने जा कर देज़ा कि बारले ओटस की जगह वहां मामूली जौ बोए गये थे। लुकमान से पूछा तो उस ने कहा कि मैंने बोए तो मामूली जौ थे लेकिन मैं रोज़ मालिक (परमात्मा) के हजूर में दुआ करता था कि हे परमात्मा, मैंने जौ मामूली जौ बोए हैं; तू अपने फज़्लो कर्म (दया) से उन्हें बारले ओटस बना दे। ज़मींदार ने कहा तुम बड़े बेवकूफ हो। लुकमान ने कहा कि मैं जब आप के जीवन पर नज़र डालता था कि सुबह से शाम तक आप ऐब करते हैं और सुबह सवेरे उठ के मालिक के हजूर में दुआ करते हैं कि ऐ मालिक, हमें बज़्श दे, मैंने सोचा कि अगर यह शज़्स जो रोज़ गुनाह करता है और रोज़ दुआ करता है, बज़्शा जाता है तो मैंने जो मामूली जौ बोए हुए हैं वे भी बारले ओटस बन सकते हैं। बात हंसने की भी है और विचार करने की भी। हमारा जीवन नहीं रहा। समाजों के आगू (नेता) भी वे नहीं है; न भाई भाई रहे, न पंडित पंडित और न मुल्ला मुल्ला। अंदर की ध्वनि न रही न बाहर की शज़्लों और बनावटों से ज़्या होता है। दशम गुरु साहब फरमाते हैं:-

रहनी रहे सोई सिख मेरा।
सो साहब मैं उस का चेरा॥

फरमाते हैं जिस की रहनी अपनी है, जिस का जीवन सदाचार का जीवन है, आज अगर कोई कमी है तो जीवन की कमी है; न उपदेश का घाटा है न रस्मो रिवाज का, न धर्म ग्रंथों का, न धर्म प्रचार का मगर जीवन नहीं रहा, अमल नहीं रहा सदाचार नहीं रहा। लोग कोई काम शुरु करते हैं तो बड़ी श्रृद्धा और भाव सहित कहते हैं कि किसी पंडित को बुला लो, पादरी को बुला लो मगर समाज के उन पैराकारों (रहबरों) का वह जीवन ही नहीं रहा, सब बिज़नेस व्यापार हो रहा है। कबीर साहब फरमाते हैं:-

इक दो होएं उन्हें समझाऊं

यहां तो सारी दुनिया बही जा रही है। महात्मा दुनिया को यही बातें समझाने आते हैं तो लोग डंडा लेकर उनके पीछे पड़ जाते हैं। उन्हें गलत रास्ते पर चलने वाला कहते हैं। वे ज़्या कहते हैं कि अवगुण छोड़ दो, नेक पाक जीवन बसर करो, जो गुनाह तुम ने किए हैं उन के लिए पाश्चाताप करो, गुनाहों की मैल को आंखों के पानी से धो दो, दिल के दाग किसी और तरीके से नहीं धोए जा सकते हैं। आगे तुम अनुभव, self knowledge के लिए जाओ किसी अनुभवी महात्मा के पास।

दरज़्त को काटना हो तो पहले उस की शाखों को काटो। शाखों का काटना ज़्या है ? रोज़् रोज़ अपने जीवन की पड़ताल करना, एक एक कर के अपनी खामियों को बाहर निकालते जाना, रह गये जन्म जन्म के पिछले संस्कार, वह नाम काटेगा। नाम से लगने के लिए जाओ किसी अनुभवी महात्मा के पास। यह है महापुरुषों का उपदेश जो सारी मनुष्य जाति के लिए है, यह उपदेश किसी खास समाज के लिए नहीं। इस लिए जब महापुरुष चोला छोड़ते हैं तो सब समाजों वाले कहते हैं कि वे हमारे थे। एक बार श्री गुरु नानक साहब का जन्म दिन मनाया जा रहा था, उस मौके पर मुखतलिफ समाजों के उपदेशकों ने तकरीरें (भाषण) कीं। हिन्दू ने कहा, वह हिन्दू थे मुसलमान ने कहा, वह मुसलमान थे। बाद में एक पादरी साहिब उठे, उन्होंने कहा, वह मसीह थे। महापुरुष सब के होते हैं, वह नूर के बच्चे होते हैं। They are the children of light. वे जब आते हैं तो सारी दुनिया को रोशनी दे जाते हैं। संतों की बाणी में हर चीज़् के बारे में उपदेश मौजूद है, हर चीज़् को उन्होंने खोल-खोल कर ज़्यान किया है, गुरबाणी कहती है :-

लेखे कदे न छुट्ट सी लिख लिख भुल्लणहार।
बज़्शणहारा बज़्श ले नानक पार उतार॥

वह परमात्मा जिस पोल पर वह प्रज़्ट है वह बज़्श दे तो पार उतारा हो जाता है वरना कर्मों की सज़ा-जज़ा का सिलसिला खत्म नहीं होता।

यसु मसीह के जीवन का वाकेया है। अपने एक शार्गिद साईमन के घर गये। जैसे कि बड़े आदमियों का कायदा होता है, उसने बहुत से लोगों को इस मौके पर बुलाया हुआ था, बहुत से लोग इकट्ठे थे। इतने में एक जवान वेश्या आई, महात्मा की शज़्ल सब में निराली होती है, हज़ारों में से नज़र आ जाता है, वेश्या ने मसीह को देखा, महात्मा को देख कर अपने अवगुणों का अहसास बढ़ता है। वेश्या ने बे-अज़्तियार अपना सिर मसीह के चरणों पर रख दिया और ज़ारो-ज़ार रोने लगी और अपने आंसुओं के पानी से मसीह के पांव धोए और फिर अपने सिर के बालों से उन्हें पुंछा। महात्मा यह नहीं देखता कि कोई पापी है या नहीं, वह तो भाव को देखता है। वह सिर्फ यह देखता है कि यह शज़्स हार के मेरी शरण आ गया है। मसीह ने वेश्या को उठाया। अब दुनियादारों की जैसी अपनी नज़र होती है उसी नज़र से वह सब को देखते हैं। साईमन ने दिल में कहा कि अच्छा महात्मा है कि एक वेश्या से दोस्ती कर रखी है। उस के मन में अभाव आ गया। मसीह ने देखा कि मेरा शिष्य अभाव में आ गया है, मैंने ही उठाना है। फरमाया साईमन :-

साईमन ने जो अभाव में आ चुका था बड़ी लाचारी से कहा, जी।

मसीह ने कहा अगर किसी शज़्स ने एक आदमी से पांच सौ रुपए लिए हों और दूसरे से सिर्फ पांच रुपए और वह दोनों को अपना कर्ज़ा मुआफ कर दे तो बताओ उस ने किस पर ज़्यादा मेहरबानी की। साईमन ने मन ही मन सोचा कि महात्मा कितना चालाक है। चतुनाई से बात छिपाना चाहता है। बोला उस शज़्स पर ज्यादा मेहरबानी की गई जिस ने पांच सौ रुपए देने थे। मसीह ने कहा देख साईमन, मैं तेरा मेहमान था, तूने मेरे पांव नहीं धोए, तूने मेरे हाथ नहीं पोंछे, उसने अपने बालों से मेरे पांव पोंछ दिये हैं। फिर वेश्या से मुखातिब हो कर मसीह ने कहा Madam I forgive thee for thou hast loved much, मैं तुझे क्षमा करता हूं और यह कह कर उस के सिर पर हाथ रख दिया। लेखे से, हिसाब से कभी खलासी नहीं होती, एक सांस में हम हजारों कीड़े मार देते हैं कहां तक कोई हिसाब देगा। गुरवाणी कहती है:-

सभी हराम जेता किछ खाया॥

कुरान में ज़िक्र आता है, एक फकीर सारी उम्र जंगल में तपस्या करता रहा। वहां पानी का सिर्फ एक चश्मा था और सारे जंगल में एक अनार का दरज़्त था जहां रोज़ एक अनार पकता था। वह चश्मे का पानी पी कर और अनार खा कर इबादत में मशरूफ हो जाता। जब खुदा के हजूर में गया तो अल्लाह ताला ने फरमाया, जा हमने अपने फ़ज़ो करम से तुझे बज़्श दिया। उसने दिल में सोचा कि सारी उम्र अल्लाह-अल्लाह करते गुज़र गई और अब भी खुदा की टांग ऊंची ही रही। इतने में कादिरे मुतअल्लिक ने फरमाया, कहो तो तुज़्हारा हिसाब कर दिया जाये। उसने कहा हां हजूर हिसाब हो जाये तो अच्छा है। अल्लाह ताला ने फरमाया, जिस जगह तू इबादत करता था वहां सैंकड़ों कोसों तक कहीं पानी का नाम निशान तक न था, हम ने तेरे लिए ताज़ा पानी का चश्मा मुहैया किया। कुदरत के कानून के मुताबिक किसी भी दरज़्त पर हर रोज़ अनार नहीं पक सकता है। हम ने तेरे खातिर कुदरत के सारे कानूनों को नज़रअंदाज़ कर के रोज़ एक अनार पकाया। यह हुआ तेरी उम्र भर की रियज़त और इबादत का फल। अब फलां जगह जब तो जा रहा था तो हजारों कीड़े तेरे पांवों तले आ कर मर गये। यहां तक बात सुनी तो आबिद को होश आ गई और गिड़गिड़ा कर कहने लगा, ऐ खुदा, अपने फ़ज़ल करम से तू मुझे बज़्श दे।

आमिल जो कहता है उस के कहने के मुताबिक कमाई करो। मन इंद्रियों के ऊपर आ गये तो दुनिया के सारे रस फीके पड़ जाते हैं। अनुभवी पुरुष तुज़्हें मन इंद्रियों के घाट से ऊपर आने की पूर्ण युक्ति देता है। पीछे जो बुरे कर्म किए हैं उन के लिए दुआ करो, आगे के लिए बुरे कामों से बाज़ आ जाओ। पिछले संस्कार नाम की अग्नि से दग्ध जो जायेंगे। जो दाने की ज़ट्ठी में भून दिये जायें वे उगने के काबिल नहीं रहते।

सर अपसर की सार न जाणे
फिर फिर कीच बुडाही जीओ॥

फरमाते हैं कि हमें नेक व बद की सार नहीं । नेकी ज़्या है, बदी ज़्या है हमें खबर नहीं। बार बार हम इंद्रियों की गलाज़त में गिरते हैं। सब इंद्रियों में गलाज़त होती है। मुंह से लुआब और बलगम जाती है। नाक से सींढ, जिस्म से पसीना, आंख से गीड, यह सब गलाज़तें ही तो हैं। फरमाते हैं नेक व बद की हमें खबर नहीं। जितने भी साधन हम ने किए सब इंद्रियों के घाट पर किए। लोग कहते हैं, अगर हम नेक पाक बन जायें तो फिर आप ही कल्याण हो जायेगा।

इंद्रियों के घाट पर बैठे हुए तुम पूरी तरह नेक पाक नहीं बन सकते, कहीं न कहीं गिरने का सामान बना रहेगा। इतिहास पढ़ कर देख लो। पराशर ऋषि के साथ ज़्या हुआ और वह तो भला एक आध बार गिरे होंगे, हम तो रोज़ गिरते हैं। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर न आओ, अंतर में टिकने की जगह न मिले, बाहर के रस फीके न पड़ें गिरने का सामान बदस्तूर बना रहेगा

अंतर मैल लोभ बहु झूठे
बाहर नहाओ काही जीओ॥

अंतर में काम, क्रोध, लोभ की मैल भरी हुई है, बाहर नहाने से ज़्या होता है:-

मन मैले तां सब किछ मैला
तन धोते मन हच्छा न होए॥

बाहर नहाने से मन तो अच्छा नहीं होता, हां उस से बदन में चेतनता ज़रूर आती है। नहाना किसी काम में मददगार साबित हो सकता है मगर मन की मैल तो बाहर नहाने धोने से नहीं उतरेगी। अब आगे बताते हैं कि अंतर की मैल कैसे साफ होगी।

निरमल नाम जपो सद गुरमुख
अंतर की गत ताही जीओ॥

अब निर्मल नाम कहा है। इस का मतलब है कोई अलायशी (मैला) नाम भी

है। जो अंतर जाने वाले हैं वे इस बात को समझेंगे। नाम की जो धारा है उस में तत्वों की धारा भी मिली हुई होती है स्थूल माया से। जिस्म से ऊपर आ गये तो स्थूल तत्वों की धारा छट गई। इस तरह सूक्ष्म और कारण तत्वों की धारायें हैं। स्थूल, सूक्ष्म, कारण से ऊपर आकर निर्मल नाम की धारा मिलती है। नाम महिमा ऊपर आ चुकी है। दो किस्म के नाम हैं, एक अक्षरी नाम जो उस रमी हुई घट घट व्यापी ताकत का बोध कराते हैं। एक वह नाम पावर जिस का अक्षरी नाम बोध कराते हैं। अल्लाह, राम, वाहेगुरु, खुदा यह सब अक्षरी नाम हैं। इन अक्षरी नामों से चल कर हम ने नाम के साथ उस पावर के साथ लगना है जिस का बोध अक्षरी नाम करा रहे हैं। नाम से चल कर नामी को name से चल कर named को, denote से चल कर denotee को हम ने पकड़ा है। आब, वाटर, पानी, जल यह अक्षरी नाम एक चीज़ का बोध करा रहे हैं। इन नामों का उच्चारण करते रहो प्यास तो नहीं बुझेगी। प्यास बुझाने के लिए पानी को पीना पड़ेगा। सो फरमा रहे हैं श्री गुरु नानक साहब कि निर्मल नाम के साथ लगो। तुज़्हारी सब मैलें दूर हो जायेंगी।

दुनिया अक्षरी नामों के साथ उलझ कर रह गई। उलझ रही है से मेरी मुराद यह है कि उन अक्षरी नामों को ही be all and end all, सब कुछ समझे बैठी है। दुनिया की हालत ज़्या है, जैसे चार अंधे हाथी को देख रहे थे कि किसी के हाथ सूंढ आई, किसी का हाथ पांवों पर जा पड़ा, कोई पेट को टटोलने लगा, सब ने एक एक अंग से अंदाज़ा किया कि यही हाथी है। हम इंद्रियों के घाट पर सो रहे हैं, हर चीज़ को जिस्म के लेवल से देख रहे हैं। जागृत पुरुष जो इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर अपने आप में जाग उठा है वह देखता है कि सब कुछ इस के अंतर में है। दुनिया के लोग अपने अपने अंदाज़े लगाते हैं। कोई कहता है वह आकार है, कोई कहता है वह निराकार है। जिसने हकीकत को पा लिया उसे सब कुछ उलट दिखाई देता है। दुनिया के लोग उसे बाहर तलाश करते हुए अपने अपने अकल अंदाज़ों की जकड़ों में रह गये। जब तक कोई अनुभवी पुरुष न मिले, इंद्रियों से ऊपर ला कर उस रमी हुई घट घट व्यापी नाम पावर का contact न मिले, उस का ताल्लुक न दे सही मायनो में हम उस नाम पावर को समझ ही नहीं सकते। श्री गुरु नानक साहब ने मिसालें दे कर समझाने का यत्न किया है कि नाम पावर के साथ लगने से कैसे मैल कटती है।

भरिये हत्थ पैर तन देह॥
पानी धोते उतरस खेह॥
मूत पलीती कप्पड़ होए॥
दे साबण ओह लइए धोए॥

हाथ पांव मिट्टी से सन जाते हैं तो पानी से धोए जा सकते हैं, कपड़े गलाज़त से लुआब हो जायें तो साबुन से धोये जा सकते हैं आगे फरमाते हैं :-

भरिये मत पापां के संग॥
ओह धोपै नावें के रंग॥

जन्म जन्म की मैल धोने का ज़रिया नाम है। जब तक इंद्रियों के घाट से ऊपर आकर ज्ञान अग्नि से न लगो तब तक कर्मों की यह मैल दूर नहीं होती। ज्ञान ज़्या है ? गुरबाणी ने ज्ञान की तारीफ की है:-

ज्ञान ध्यान धुन जाणिए अकथ कहावै सोए॥

जिन्होंने हकीकत को पा लिया वे पुकार पुकार कहते रहे, यही चीज़ है यह ध्वनि, आकाशवाणी जो हर वक्त हर इंसान के अंतर में लगातार हो रही है इसे पा लो। बाकी कर्म धर्म का जो भी सिलसिला है वह उसी परमार्थ के पाने के लिए ज़मीन की तैयारी है। हम जिस्म के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, जिस्म पुष्ट होना चाहिए, इस की भी ज़रूरत है, बुद्धि के भी पहलवान बनो लेकिन इन दोनों का आधार तुज़्हारी आत्मा है उसको न जाना तो सब किया कराया बेकार। इस लिए सब धर्म ग्रंथों ने और जितने ऋषि मुनि महात्मा आज दिन तक आए उन सब ने यही कहा कि अपने आप को जानो। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं:-

कहो नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भरम की काई॥

हजूर स्वामी जी महाराज फरमाते हैं:-

चेतन रूप समारो अपना

बाईबल कहती है know thyself. तुम जिस्म नहीं, तुम जड़ नहीं चेतन हो, निर्मल हो। यह तो है परमार्थ का सार, और दुनिया ज़्या समझे बैठी है। संत महात्मा किसी को बुरा नहीं कहते । वे हर चीज़ के बारे में सही नज़री से काम लेना सिखलाते हैं। वे न समाजों को तोड़ते हैं न नई समाज बनाते हैं। वे आप आज़ाद होते हैं दुनिया को जकड़ों से आज़ाद कराने आते हैं। एक मिसाल है, अकबर ने कहा कि कोई है जो इस लकीर को काटे बिना इसे छोटा कर दे। बीरबल आये, और लज़्बी लकीर उस के साथ खींच दी, वह आप छोटी हो गई। महात्मा अपने आदर्श की लज़्बी लकीर साथ खींच देते हैं कि यह आदर्श है अब खुद समझ लो कि तुम कहां बैठे हो।

परहर लोभ निंदा कूड़ त्यागो सच गुर बचनी फल पाही जीओ॥

अब और वाजह करते हैं इस मज़मून को कि पर हर छोड़ दो। जिस की आंख लोभ से रंगी हुई है वह उसी नज़र से दुनिया को देखेगा, उस से हज़ारों के गले पर छुरी फिरवा लो। दस बीस लोग रख लो। उन से जो चाहो कहलवा लो, झूठ सच सब बराबर हो जाता है। संत कहते हैं सुनी सुनाई बात पर यकीन न करो, अपनी आंखों से देखो, अपने कानों से सुनो तब यकीन करो। संतों को बड़ी आज़ाद तालीम है। वे कहते हैं:-

जब लग न देखूं अपनी नैनी॥
तब लग न पतीजूं गुर की बैनी॥

जो सुनी सुनाई बात पर यकीन कर के मारे मारे फिरते हैं कि फलां ऐसा है फलां ऐसा है या जो लोभ लालच में बंधे पड़े हैं वे कैसे सच कह सकते हैं। निंदा ज़्या है ? किसी चीज़ को या तो over rate (बढ़ा चढ़ा कर कहना) करना, उस के बारे में मुबालिग से काम लेना या फिर उसे under rate (घटा कर कहना) करना, उस की असल अहमियत को घटाना। हजूर के वक्त में जिसे कहते थे कि यह एम0 ए0 पास है, आज कहते हैं कि वह पहली जमात भी पास नहीं Hate the sin but love the sinner. नेक की निंदा तो नहीं करनी चाहिए, बुरे की निंदा भी न करो। गंदगी पर पत्थर फेंकोगे तो तुम पर भी छींटे पड़ेंगे। सब से प्यार करो, प्यार में बड़ी बरकत है। मसीह कहता है Love and all things shall be added unto you. ज़बान में मिठास होनी चाहिए और दिल में सब के लिए प्यार, दया का भाव। आगे फरमाते हैं कूड़ भी छोड़ दो। कूड़ कहते हैं फना चीज़ को। गुरबाणी में कूड़ की यह तारीफ की है:-

कूड़ सब संसार
कूड़ कूड़े नेहो लग्गा विसरेया करतार॥
किस नाल कीजै दोस्ती सभ जग चल्लणहार॥

फानी जिस्म का फानी जिस्मानी ताल्लुकात से प्यार लगा और वह मालिक को भूल गया। यह सारा दृष्य जगत फानी (नाशवान) है, हम इस में ज़रा सी देर के राही हैं, राही का राही से प्यार ज़्यों ? दुनिया की चीज़ों में हमेशा रहने वाली कौन सी चीज़ है ? लोभ का कुज़ा भौंकता है, उसे बंद करो, निंदा छोड़ो, देखो तो किसी के गुण देखो, बुराई न देखो ताकि आलायशों का असर तुम पर न हो। दो तरीके हैं प्रचार के एक पोज़िटिव दूसरा नैगेटिव, कहीं लिखा हो 'इसे मत पढ़ो'। आप ज़रूर पढ़ेंगे। मैंने एक किताब पढ़ी थी, उस का नाम Fore thought v/s pre thought था। उस में लिखा था कि मसीही मिशनरी जापान गये। वहां लोगों को उपदेश दिया, Thou shall not strike a woman, औरतों पर हाथ मत उठाओ। जापान वाले हैरान कि आप के यहां औरतों पर भी हाथ उठाया जाता है। उन के वहमो-गुमान (ज़्याल) में भी यह बात न आई थी कि औरतों को भी पीटा जाता है। कुछ अर्से के प्रचार का नतीजा यह हुआ कि वे सचमुच औरतों को पीटने लगे। नैगेटिव प्रचार का नैगेटिव असर होगा। पापी से भी प्यार करो तो वह अपनी खसलत बदलने पर मजबूर हो जायेगा।

जिन्नी चल्लण जाणेया सो ज़्यों कूड़ प्यार॥

जिसने इस हकीकत को जान लिया कि जिंदगी चंद रोज़ है, दुनिया की कोई चीज़ हमेशा रहने वाली नहीं है वह ज़्यों झूठ, दगा, फरेब से काम लेगा। महापुरुषों का उपदेश सारी दुनिया के लिए होता है, वे किसी समाज या जाति के गुरु नहीं होते, वे सारी दुनिया को रोशनी देते हैं। उन की शज़्सियत और उन का उपदेश किसी खास समाज या जाति का अजारा reserved right नहीं। वह सारी मनुष्य जाति की मिरास हैं। श्री गुरु नानक साहब को काज़ी के पास ले गये कि यह कहता है कि हिन्दू मुस्लिम सब एक हैं, यह कुफ्र का प्रचार करता है। काज़ी ने पूछा आप कौन हैं ? उन्होंने जवाब दिया:-

हिन्दू कहां ते मारिये मुसलमान भी नाहिं॥

अगर मैं कहूं कि मैं हिन्दू हूं तो तुम जिस्म व जिस्मानियत की जकड़ों के कारण मुझे मारते हो। जिस चीज़ को तुम मुसलमान समझे बैठे हो ज़ाहिरी शकलों और बनावटों और शरीयत के चिन्ह चक्रों को, मैं उस नज़र से मुसलमान भी नहीं।

पांच तज़ का पुतला गैबी खेले माहिं॥

पांच तत्वों का पुतला यह इंसानी जिस्म है जिस में गैबी ताकत काम कर रही है वह मैं हूं। हजूर से भी किसी ने यही सवाल पूछा, उन्होंने फरमाया कि परमात्मा हिन्दू है तो मैं हिन्दू हूं, वह मुसलमान है तो मैं मुसलमान हूं, वह सिख है तो मैं सिख हूं। आत्मा की वही ज़ात है जो परमात्मा की। महापुरुषों की नज़र है। कहां वह कहां हम । वह अर्श पर प्रवाज़ करने वाले और हम नीचे जकड़ों में पड़े हुए हैं। हम तो उन की वाणी को समझने के भी काबिल नहीं।

ज्यों भावे त्यों राखो हर जीओ
जन नानक शज़्द सलाही जीओ॥

अब प्रार्थना कर रहे हैं कि ऐ मालिक दुनिया अधोगति में जा रही है, सारा जगत चल रहा है। तुम दया कर के जैसे भी बने इसे बचा ले।

जगत जलंदा रख लै प्रभ आपण किरपा धार॥

जिस हीले से भी यह बच सकते हों तू इन्हें बचा ले कितनी दर्द भरी अपील है। ये लोग दुनिया का दर्द अपने सिर ले लेते हैं। हजूर से मैंने एक बार पूछा कि महाराज आप तो नेहकर्म है, आप को ज़्या चिंता है। फरमाया, जब दूसरों का भार सिर पर उठाया है तो वह भी अपना है। महापुरुष दुनिया का दुख हरने के लिए आते हैं तारीख (इतिहास) उठा कर देख लो। श्री गुरु नानक साहब फरमाते हैं :-

नानक नाम चढ़दी कला॥
तेरे भाणे सरबत का भला॥

वे सब का भला चाहने वाले होते हैं। इस शज़्द में कितनी खूबसूरती से बताया है कि इंद्रियों का घाट छोड़ दो और अंतर में नाम से लगो। अब प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक, सब का भला कर । कितना विशाल हृदय है उन का। हमारी प्रार्थना ज़्या होती है ? हमारे बाल बच्चे राज़ी हों, हमारा समाज हमारा देश ठीक रहे। वे सारी मनुष्य जाति का उधार करने वाले होते हैं। जैसे बाहर की बादशाहत है वैसे अंतर की बादशाहत है। वह सच्चे पातशाह होते हैं जिन्हें प्रभु जीवों के उधार के लिए भेजता है।

****